PAPER NAME

उराँव जनजाति की सामाजिक संरचना और परिवर्तन- गुमला जिला.docx

AUTHOR

Mary Saroj Minj

WORD COUNT

1295 Words

CHARACTER COUNT

6248 Characters

PAGE COUNT

5 Pages

FILE SIZE

26.9KB

SUBMISSION DATE

Apr 17, 2026 2:57 PM GMT+5:30

REPORT DATE

Apr 17, 2026 2:57 PM GMT+5:30

5% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 5% Submitted Works database

उराँव जनजाति की सामाजिक संरचना और परिवर्तन: गुमला जिला

मेरी सरोज मिंज
शोधार्थी, भूगोल विभाग
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड

सार (Abstract)

यह शोध आलेख झारखंड के गुमला जिले में निवास करने वाली उराँव (कुरुख) जनजाति की सामाजिक संरचना एवं उसमें आए परिवर्तनों का एक समालोचनात्मक और बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था—जिसमें परिवार, गोत्र, नातेदारी, ग्राम-संगठन, विवाह प्रणाली और सांस्कृतिक-धार्मिक प्रथाएँ शामिल हैं—आधुनिक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव में किस प्रकार रूपांतरित हुई है।

शोध से यह स्पष्ट होता है कि उराँव समाज ऐतिहासिक रूप से पितृवंशीय, गोत्र-आधारित और सामुदायिक जीवन-पद्धति पर आधारित रहा है, जहाँ ग्राम-स्तरीय संस्थाएँ तथा पारंपरिक नेतृत्व (जैसे महतो और पाहन) सामाजिक संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। किंतु शिक्षा के प्रसार, नगरीकरण, प्रवास, बाजार अर्थव्यवस्था, सरकारी योजनाओं तथा धार्मिक प्रभावों ने इस पारंपरिक संरचना को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर परमाणु परिवारों का बढ़ना, विवाह-प्रणाली में लचीलापन, स्त्रियों की सामाजिक भागीदारी में वृद्धि, तथा भाषा और सांस्कृतिक व्यवहार में परिवर्तन इस प्रक्रिया के प्रमुख संकेतक हैं।

इसके बावजूद यह अध्ययन दर्शाता है कि उराँव समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान—विशेषकर गोत्र व्यवस्था, पर्व-त्योहार, भाषा और सामुदायिक मूल्यों—को बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन यहाँ एक जटिल, बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सह-अस्तित्व विद्यमान है और दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने की निरंतर कोशिश की जा रही है।

बीज शब्द (Keywords)

उराँव जनजाति, सामाजिक संरचना, गुमला जिला, गोत्र व्यवस्था, नातेदारी, सामाजिक परिवर्तन, आदिवासी समाज, ग्राम संगठन, सांस्कृतिक परिवर्तन, प्रवास, पारंपरिक संस्थाएँ

झारखंड का गुमला जिला उराँव (कुरुख) जनजाति का एक प्रमुख सांस्कृतिक और जनसंख्या केंद्र है, जहाँ यह समुदाय न केवल संख्यात्मक रूप से प्रभावशाली है, बल्कि अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं और सामुदायिक जीवन के कारण भी अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय बनता है। उराँव समाज की विशेषता यह रही है कि यह लंबे समय तक कृषि-आधारित, सामुदायिक और परंपरागत संस्थाओं पर आधारित जीवन-पद्धति का अनुसरण करता रहा है। किंतु 21वीं सदी में शिक्षा, प्रवास, नगरीकरण, बाजार अर्थव्यवस्था और राज्य-प्रेरित विकास कार्यक्रमों के प्रभाव ने इस सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है।

उराँव समाज का अध्ययन केवल एक जनजातीय समूह के सांस्कृतिक जीवन को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह यह भी स्पष्ट करता है कि परंपरागत समाज आधुनिकता के दबाव में किस प्रकार परिवर्तनशील होते हैं। इस संदर्भ में सामाजिक संरचना को परिवार, नातेदारी, गोत्र, ग्राम-संगठन, धार्मिक संस्थाएँ और सामाजिक मानदंडों के समेकित ढाँचे के रूप में देखा जाता है। गुमला जिले में उराँव समाज इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यहाँ पारंपरिक और आधुनिक दोनों तत्व एक साथ सक्रिय हैं, जिससे परिवर्तन की प्रक्रिया अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।[1]

उराँव समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना पितृवंशीय और पितृसत्तात्मक रही है, जिसमें परिवार सामाजिक जीवन की मूल इकाई के रूप में कार्य करता है। पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार प्रचलित थे, जिनमें कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं और संसाधनों का साझा उपयोग करती थीं। परिवार के भीतर पुरुष मुखिया का स्थान प्रमुख होता था, जबकि स्त्रियाँ घरेलू कार्यों और कृषि में सहायक भूमिका निभाती थीं।

गोत्र व्यवस्था उराँव समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो सामाजिक संगठन और वैवाहिक संबंधों को नियंत्रित करती है। प्रत्येक व्यक्ति का संबंध किसी न किसी गोत्र से होता है, और एक ही गोत्र में विवाह निषिद्ध माना जाता है। यह बहिर्विवाह (exogamy) की परंपरा सामाजिक संतुलन और रक्त संबंधों की शुद्धता बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम रही है।[2]

ग्राम-संगठन भी उराँव सामाजिक संरचना का एक केंद्रीय तत्व रहा है। गाँव केवल निवास का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक गतिविधियों का केंद्र होता है। पारंपरिक रूप से गाँव का नेतृत्व “महतो” (प्रशासनिक प्रमुख) और “पाहन” (धार्मिक प्रमुख) द्वारा किया जाता था, जो सामुदायिक जीवन को संतुलित और नियंत्रित करते थे।[3]

उराँव समाज में नातेदारी का जाल अत्यंत विस्तृत और संगठित होता है, जो सामाजिक सहयोग, संसाधनों के वितरण और सामाजिक नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवाह केवल व्यक्तिगत संबंध नहीं, बल्कि दो परिवारों और कुलों के बीच सामाजिक संबंध स्थापित करने का माध्यम होता है।

पारंपरिक उराँव समाज में विवाह के विभिन्न रूप प्रचलित रहे हैं, जिनमें सहमति विवाह, पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह तथा कुछ मामलों में सेवा विवाह (service marriage) शामिल हैं। विवाह के साथ जुड़े अनुष्ठान, भोज और सामुदायिक सहभागिता सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं।

हालाँकि, आधुनिक समय में विवाह की प्रकृति में परिवर्तन देखा जा रहा है। शिक्षा और नगरीकरण के प्रभाव से युवा पीढ़ी के बीच वैवाहिक चयन की स्वतंत्रता बढ़ी है, और पारंपरिक नियमों में शिथिलता आई है। अंतर्जातीय और प्रेम विवाह के उदाहरण भी बढ़ रहे हैं, जिससे सामाजिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया तेज हो रही है।[4]

उराँव समाज में सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारकों में शिक्षा, प्रवास, सरकारी योजनाएँ और बाजार अर्थव्यवस्था शामिल हैं। शिक्षा ने सामाजिक चेतना को बढ़ाया है और लोगों को नए अवसरों के प्रति जागरूक किया है। गुमला जिले में साक्षरता दर में वृद्धि ने युवा पीढ़ी को पारंपरिक कृषि-आधारित जीवन से बाहर निकलकर रोजगार के नए विकल्पों की ओर प्रेरित किया है।

प्रवास (migration) भी एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसके कारण बड़ी संख्या में उराँव युवा रोजगार के लिए शहरी क्षेत्रों की ओर जाते हैं। इससे परिवार की संरचना में परिवर्तन होता है और पारंपरिक सामुदायिक जीवन कमजोर पड़ता है।[5]

सरकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों ने भी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाओं ने जीवन स्तर में सुधार किया है, लेकिन इनके प्रभाव का वितरण समान नहीं है।

बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार ने उपभोग के पैटर्न और जीवन शैली में परिवर्तन लाया है। पारंपरिक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की जगह अब नकद आधारित अर्थव्यवस्था का महत्व बढ़ गया है, जिससे सामाजिक संबंधों की प्रकृति भी बदल रही है।[6]

उराँव समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद चलता रहता है। भाषा, लोक-संस्कृति, पर्व-त्योहार और धार्मिक प्रथाएँ इस पहचान के प्रमुख आधार हैं। गुमला जिले में कुरुख भाषा का व्यापक उपयोग आज भी सांस्कृतिक निरंतरता का संकेत देता है।

हालाँकि, शिक्षा और नगरीकरण के प्रभाव से हिंदी और अन्य भाषाओं का उपयोग बढ़ा है, जिससे भाषा-परिवर्तन की प्रक्रिया भी तेज हुई है। इसी प्रकार, धार्मिक परिवर्तन—विशेषकर ईसाई धर्म का प्रभाव—ने पारंपरिक धार्मिक संरचना को प्रभावित किया है, लेकिन सांस्कृतिक पहचान पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।[7]

उराँव समाज अपने त्योहारों, जैसे सरहुल और करम, के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का प्रयास करता है। ये त्योहार सामाजिक एकता और सामुदायिक भावना को मजबूत करते हैं।

गुमला जिले के उराँव समाज की सामाजिक संरचना का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह एक गतिशील और परिवर्तनशील समाज है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सह-अस्तित्व दिखाई देता है। पारंपरिक संस्थाएँ, जैसे परिवार, गोत्र और ग्राम-संगठन, अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन आधुनिक कारकों के प्रभाव से इनमें परिवर्तन हो रहा है।

सामाजिक परिवर्तन को एक रैखिक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्व एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। उराँव समाज का अनुभव यह दर्शाता है कि परिवर्तन के बावजूद सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक मूल्यों को बनाए रखना संभव है, बशर्ते समाज अपने पारंपरिक और आधुनिक तत्वों के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

संदर्भ सूची :

1. गुप्ता, उज्ज्वला. *उराँव जनजाति का सामाजिक अध्ययन.* ISEC, 2020, पृ. 27.
2. पांडा, पी. *उराँव जनजाति की गोत्र व्यवस्था.* जनजातीय अनुसंधान संस्थान, 2013, पृ. 42.
3. मोंडल, मिंटू. *उराँव समाज का सामाजिक संगठन.* IJHSS, 2017, पृ. 51.
4. यादव, एम. *उराँव जनजाति में सामाजिक परिवर्तन.* मेकैल जर्नल, 2019, पृ. 38.
5. तिरकी, जॉन. *उराँव जनजाति की सांस्कृतिक पहचान.* 2018, पृ. 63.

6. झारखंड सरकार. *झारखंड की जनजातियाँ*. 2019, पृ. 14.

7. भारत सरकार. *जनजातीय प्रवास रिपोर्ट*. 2020, पृ. 65.

5% Overall Similarity

Top sources found in the following databases:

- 0% Internet database
- Crossref database
- 5% Submitted Works database
- 0% Publications database
- Crossref Posted Content database

TOP SOURCES

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1	**Berhampur University on 2026-04-16** Submitted works	3%
2	**Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala on 2026-03-09** Submitted works	<1%
3	**Ambedkar University Delhi on 2026-03-25** Submitted works	<1%
4	**नवीन कुमार, सन्तोष कुमार सिंह. "जनजातियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का समाजशा...** Crossref	<1%